"जायसी की काव्यकला"

जायसी सूफी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं और उनके द्वारा रचित 'पद्मावत' उच्चकोटि का महाकाव्य। जायसी का पद्मावत काव्य कला की दृष्टि से एक उल्लेखनीय महाकाव्य माना जा सकता है। इसका वस्तु वर्णन बेजोड़ एवं प्रकृति चित्रण अनुपम है। भाव, रस, अलंकार एवं शृंगार निरूपण भी अद्भुत है। जायसी की काव्यकला में निम्न तत्व — वस्तु वर्णन, सौन्दर्य चित्रण, प्रकृति चित्रण, रहस्यवादी भावना, भाव एवं रस निरूपण, अलंकार निरूपण, छन्द योजना एवं भाषा आदि पर विचार करना अनिवार्य है।

वस्तु वर्णन — सूफी कवियों ने अपने काव्य में विभिन्न प्रकार के वस्तु वर्णनों द्वारा मानवीय ज्ञान में अभिवृद्धि की है। जायसी ने भी पद्मावत में वस्तु वर्णन को प्रमुख स्थान दिया है। पद्मावत में वन-उपवन, खाद्य सामग्री, समुद्र वर्णन, उत्सव, लोकाचार, द्वीप, नगर, राजभवन, दुर्ग, सरोवर, यात्रा, आक्रमण, युद्ध, मंत्रणा, पुत्र-जन्म, विवाह, जल-क्रीड़ा, संयोग-वियोग, जय-पराजय, वाटिका, अमराई, पनघट, हाट-बाजार, देवालय, देव-पूजा, नख-शिख आदि वर्णनों का विशद चित्रण है। जायसी का नख-शिख वर्णन एवं युद्ध वर्णन अन्य सभी वर्णनों की अपेक्षा अधिक मर्मस्पर्शी एवं सजीव है। दो सेनाओं का युद्ध वर्णन एवं आक्रमण, हाथियों की गर्जना, विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों का संचालन, रुण्ड-मुण्डों का पृथ्वी पर गिरना, कबन्धों का चमकर काटना आदि अनेक व्यापारों का रोमांचक वर्णन जायसी ने पद्मावत में किया है। इन वर्णनों में युद्ध क्षेत्र का बड़ा ही रोमांचक एवं प्रभावशाली चित्रण जायसी ने किया है।

सौन्दर्य चित्रण —

जायसी ने पद्मावती के रूप सौन्दर्य का मनोहारी चित्रण किया है। पद्मावती का रूप

Scanned with CamScanner

अलौकिक सौन्दर्य से युक्त एक ऐसी युवती का है, जिसके रेशमी बाल काले-काले सर्पों जैसे हैं। जब वह अपने जूड़े को खोलकर बाल झाड़ती है, तो बालों की कालिमा के कारण सब ओर अन्धकार छा जाता है—

"भँवर केस वह मालति रानी।
बिसहर लुरहिं लेहिं अरघानी॥
बेनी छोरि झार जौं बारा।
सरग पतार होइ अँधियारा॥"

पद्मावती की आँखें बाँकिम हैं तथा उसकी नाक तोते की चोंच से भी अधिक नुकीली और सुन्दर है। पुष्प इसी आशा में सुगन्ध बिखेर रहे हैं कि शायद वह इन्हें अपनी नासिका से लगा ले। लालिमा युक्त अधर अमृत रस से भरे हुए हैं, जिन्हें देखकर बिम्बाफल भी लाज्जित हो जा रहे हैं—

"अधर सुरंग अमिअ रस भरे।
बिम्ब सुरंग लाजि बन फरे॥"

जायसी ने पद्मावती के रूप सौन्दर्य का आलंकारिक वर्णन किया है। उनके उपमान परम्परित भले हों, किन्तु उनके सौन्दर्य वर्णन में नवीनता परिलक्षित होती है।

प्रकृति चित्रण—

जायसी का हृदय प्रकृति की मनोरम एवं मनोहर क्रीड़ाओं को देखकर मोर की भाँति नृत्य करता हुआ भाव-विभोर हो जाता है। जायसी ने मानव की चिर सहचरी प्रकृति के क्रीड़ा-कलाप को भावपूर्ण दृष्टि से देखा है तथा प्रकृति के सरस एवं सुन्दर चित्र अपने काव्य में अंकित किए हैं। पद्मावत में जायसी ने प्रकृति का चित्रण उद्दीपन एवं आलम्बन दोनों रूपों में प्रमुखता से किया है। बिम्बग्रहण प्रणाली के आधार पर प्रकृति के रम्य एवं संश्लिष्ट चित्र जायसी ने प्रस्तुत किए हैं। 'मानसरोदक' का वर्णन करते हुए जायसी ने उसके रमणीक रूप की झाँकी प्रस्तुत किया है—

"मानसरोदक बरनौं काहा। भरा समुद अस अति अनगाहा॥
पानि मोति अस निरमल तासू। अमिअ आनि कपूर सुबासू॥
लंकदीप कै किला अनाई। बांधो सरवर घाट बनाई॥"

प्रकृति के भयानक रूप का वर्णन करते हुए जायसी ने 'किलाकिला' समुद्र के भयानक रूप का चित्रण किया है, जिसमें पर्वत जैसी ऊँची लहरें उत्पन्न हो रही हैं जिसे देखकर ऐसा लगता है कि मानो आकाश टूटता हुआ जान पड़ता है—

"भा किलकिल अस उठै हिलोरा।
जनु अकास टूटै चहुँ ओरा॥
उठै लहरि परबत कै नाई।
फिरि आवै जोजन सौं ताँई॥"

प्रकृति के उद्दीपन रूप का चित्रण करते हुए जायसी ने नागमती की विरह वेदना का निरूपण इन पंक्तियों में किया गया है—

"खडग बीजु चमकै चहुँ ओरा।
बुंद बान बरसै घनघोरा॥
दादुर मोर कोकिला पीऊ।
गिरै बीजु घट रहै न जीऊ॥"

रहस्यवादी भावना—

जायसी ने उस अगोचर-अदृश्य सत्ता की ओर संकेत भावात्मक एवं साधनात्मक रहस्यवाद का समावेश अपने काव्य में किया है। जायसी का यह मानना है कि परमात्मा रूपी प्रियतम हृदय में है, किन्तु कौन है?, जो उससे मेल करा दे—

"पीऊ हिरदय में भेंट न होई।
को रे मिलाव कहौं कैहि रोई॥"

जायसी ने पद्मावत में कहीं-कहीं समासोक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक अर्थ की व्यंजना की है। उनके अनुसार परमात्मा की छवि सम्पूर्ण संसार में

व्याप्त है। सृष्टि की सारी वस्तुएँ उसी के सौन्दर्य की छाया है। मानसरोदक खण्ड में इसकी अभिव्यक्ति निम्न पंक्तियों में जायसी ने किया है—

"नयन जो देखा कँवल भा, निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखा हँस भा, दसन जोति नग हीर॥"

जायसी ने जहाँ हठयोग साधना का उल्लेख कथा प्रसंगों के बीच-बीच में किया है, वहीं पर साधनात्मक रहस्यवाद का उदाहरण देखा जा सकता है। सिंहलगढ़ वर्णन खण्ड में ऐसे अनेक वर्णन आये हैं—

"नव पौरी पर दसवँ दुवारा।
तेहि पर बाज राज घरियारा॥"

यहाँ पर सिंहलगढ़ मानव शरीर का प्रतीक है, नौ पौरियाँ नौ चक्र हैं तथा दसवाँ दरवाजा ब्रह्मरन्ध्र है जहाँ राजा का घण्टा (अनहदनाद) बजता रहता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी के रहस्यवाद का वर्णन करते हुए लिखा है, "यदि कहीं रमणीय सुन्दर, अद्वैती रहस्यवाद है तो जायसी में, जिसकी भावुकता उच्चकोटि की है।"

भाव एवं रस निरूपण —

पद्मावत शृंगार रस प्रधान रचना है। इसलिए नायिका के सौन्दर्य चित्रण में तथा नायक-नायिका के मिलन प्रसंगों में शुरू से अन्त तक 'रति' नामक स्थायीभाव की अभिव्यक्ति हुई है किन्तु नायक की मृत्यु तथा नागमती एवं पद्मावती के सती होने के प्रसंग में करुण रस की अभिव्यक्ति है। जायसी ने शृंगार रस के बड़े ही मनोरम चित्र अंकित किया है तथा संयोग एवं वियोग शृंगार में से वियोग का वर्णन अधिक गहनता एवं तत्परता से किया है। वे लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करते हैं। जायसी का वियोग वर्णन उच्चकोटि का है, जिसमें हृदय की पीड़ा का मार्मिक अभिव्यक्ति

Scanned with CamScanner

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

हुई है — "पिउ सौं कहेहु सन्देसड़ा हे भौंरा हे काग ।
सो धनि बिरहैं जरि मुई तेहिक धुँआ हम्ह लाग ।।"

युद्ध-वर्णनों में वीर रस का सुन्दर एवं सजीव चित्रण जायसी ने किया है। गोरा-बादल का युद्ध वर्णन वीर रस का अनुपम उदाहरण है। इसके साथ ही समुद्र-वर्णन में भयानक एवं अद्भुत रस का समावेश है। यदि जायसी का लक्ष्य आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यंजना करना है, तो स्पष्ट ही सारा काव्य शान्त रस से परिपूर्ण है। जायसी एक भावुक कवि हैं। अतः उन्होंने विभिन्न भावों के चित्रण में सफलता प्राप्त की है। प्रेम एवं विरह के निरूपण में जायसी को अधिक सफलता मिली है।

अलंकार निरूपण —

जायसी ने सादृश्यमूलक अलंकारों — उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, प्रतीक, व्यतिरेक, रूपकातिशयोक्ति, आदि का प्रयोग अधिक किया है। इसके अतिरिक्त अन्योक्ति एवं समासोक्ति अलंकारों का प्रयोग जायसी ने पद्मावत में किया है। जायसी की अलंकार योजना काव्य को रमणीयता प्रदान करने के साथ-साथ भावों के उत्कर्ष में भी सहायक सिद्ध हुई है। रूपकातिशयोक्ति अलंकार के द्वारा जायसी ने अद्भुत कौशल दिखाया है —

"साम भुअंगिनि रोमावली। नाभिहि निकसि कँवल कहँ चली।।
आइ दुवौ नारंग बिच भई। देखि मयूर ठमकि रहि गई।।"

पद्मावत में जायसी ने उत्प्रेक्षा अलंकार की तो जैसे झड़ी लगा दी। वैसे भी कल्पना में सबसे ज्यादा सहायक उत्प्रेक्षा अलंकार ही होता है। उत्प्रेक्षा के माध्यम से जायसी ने अद्भुत आकर्षण उत्पन्न किया है —

"बरुनी का बरनौं इमि बनी। साधे बान जान दुइ अनी।।
जुरी राम रावन कै सैना। बीच समुद्र भए दुइ नैना।।
भौंहें स्याम धनुक जनु ताना। जासहुँ हेर मार बिष बाना।।"

उपमा — भौंर केस वह मालति रानी।
बिसहर लुरैं लेहिं अरघानी।।"

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

व्यतिरेक — "का सरवरि तेहि देउँ मयंकू।
चाँद कलंकी वह निकलंकू॥"

विभावना — "जीउ नाहिं पै जिए गुसाईं।
कर नाहिं पै करै सवाई॥"

सांगरूपक — "खड्ग बीजु चमकै चहुँ ओरा।
बुंद बान बरसहिं घनघोरा॥
चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा।
साजा बिरह दुन्द दल बाजा॥"

दृष्टांत — "का भा जोग-कथनि के कथे।
निकसै घिउ न बिना दधिमथे॥"

छन्द-योजना —

जायसी ने मुख्यतः चौपाई तथा दोहा छन्द का प्रयोग पद्मावत में किया है। डॉ० शम्भूनाथ सिंह ने जायसी के छन्द-योजना के बारे लिखा है, "पद्मावत में आदि से अन्त तक सभी कड़बकों में चौपाई छन्द का और कड़बकान्त में घत्ता के रूप में दोहा छन्द का प्रयोग हुआ है।" इतिवृत्तात्मक वर्णन के लिए चौपाई-दोहा छन्द सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है। जायसी ने सात अर्द्धालियों के बाद एक दोहे का विधान किया है।

भाषा — जायसी ने पद्मावत में ठेठ ग्रामीण अवधी भाषा का प्रयोग किया है। जो बोलचाल की अवधी भाषा है तथा इसमें अरबी-फारसी के शब्दों की प्रचुरता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार "जायसी की भाषा देशी साँचे में ढली हुई, हिन्दुओं के घरेलू भाव से भरी हुई बहुत ही मधुर और हृदयग्राहिणी है।" जायसी की भाषा पर संस्कृत के शब्दों का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है। इसके साथ ही उनकी भाषा मुहावरेदार भी है।

वस्तुतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि सूफी काव्यधारा के

महाकवि जायसी की काव्यदृष्टि अत्यन्त व्यापक थी। उन्होंने लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करते हुए हिन्दी के महान कवियों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफलता पाई है।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास

Scanned with CamScanner